अभ्यास द्वारा उसकी उपासना करनी चाहिए। कवियों के कृतित्व का अध्ययन भी करना चाहिए। जिससे अभ्यास नित्यप्रति दृढ़ होता जाए। आचार्य वामन ने भी अभ्यास को महत्व देते हुए लिखा है—**'अभ्यासोहि कर्मसु कौशलं भावहिति।'**

अर्थात् अभ्यास के द्वारा ही कवि कर्म में कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

आचार्य दण्डी ने तो अभ्यास को ही काव्य का प्रमुख हेतु माना है। वे तो यहां तक कहते हैं कि प्रतिभा और व्युत्पत्ति के अभाव में केवल अभ्यास से ही काव्य रचना में कोई कुशल हो सकता है। सरस्वती की साधना से और शास्त्रों के श्रवण से कोई भी व्यक्ति सफल कवि बन सकता है। दण्डी की यह

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं प्रतिभा व्युत्पत्ति और अभ्यास ही प्रमुख काव्य हेतु हैं। प्रतिभा सर्वप्रमुख है जिसे व्युत्पत्ति और अभ्यास से निखारा जा सकता है। वस्तुतः ये तीनों समन्वित रूप काव्य के हेतु हैं जिन्हें अलग-अलग नहीं किया जा सकता जिस प्रकार पानी को बार-बार छानने से वह निर्दोष हो है और बर्तन को बार-बार मांजने से वह चमक उठता है प्रकार व्युत्पत्ति और अभ्यास से प्रतिभा को निर्दोष आकर्षक बनाया जा सकता है।

काव्य प्रयोजन

काव्य प्रयोजन का तात्पर्य है—'काव्य रचना का उद्देश्य'। काव्य किस उद्देश्य से लिखा जाता है और किस उद्देश्य से काव्य पढ़ा जाता है इसे दृष्टिगत रखकर काव्य प्रयोजनों पर विस्तृत विचार-विमर्श काव्यशास्त्र में किया गया है। काव्य प्रयोजन काव्य प्रेरणा से अलग है, क्योंकि काव्य प्रेरणा का अभिप्राय है काव्य की रचना के लिए प्रेरित करने वाले तत्व जबकि काव्य प्रयोजन का अभिप्राय है काव्य रचना के अनन्तर (बाद में) प्राप्त होने वाले लाभ। यहां हम काल-क्रमानुसार विभिन्न आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजनों की समीक्षा करेंगे।

1. **भरत मुनि**—'नाट्य-शास्त्र' के रचयिता भरत मुनि ने नाटक के प्रयोजनों पर विचार करते हुए लिखा है :

धर्म्यं यशस्यं आयुष्यं हितं बुद्धि विवर्धनम्।
लोको उपदेश जननम् नाट्यमेतद् भविष्यति।।

भरत मुनि द्वारा निर्दिष्ट इन प्रयोजनों में भौतिक प्रयोजनों का व्यापक उल्लेख है, किन्तु काव्य का प्रधान उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है जिसका उल्लेख यहां नहीं किया गया है। एक अन्य स्थान पर उन्होंने नाटक का उद्देश्य दुःखार्त व्यक्ति को सुख और शान्ति की प्राप्ति करना बताया है।

2. **भामह**—आचार्य भामह ने काव्य प्रयोजनों की चर्चा करते हुए लिखा है :

धर्मार्थ काम मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्ति प्रीतिञ्च साधुकाव्य निबन्धनम्॥

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कलाओं निपुणता के साथ-साथ उत्तम काव्य से कीर्ति और प्रीति (आनन्द की भी प्राप्ति होती है। भामह के प्रयोजन व्यापक हैं तथा कवि और पाठक दोनों के काव्य प्रयोजनों की चर्चा है।

3. **आचार्य वामन**—वामन के अनुसार :

"काव्यं सद्दृष्टा दृष्टार्थ प्रीति-कीर्ति-हेतुत्वात्।"

अर्थात् काव्य में दो प्रमुख प्रयोजन हैं :

1. प्रीति अथवा आनन्द साधना
2. कीर्ति अथवा यश प्राप्ति

4. **आचार्य मम्मट**—आचार्य मम्मट ने अपने ग्र **'काव्यप्रकाश'** में काव्य प्रयोजनों पर विस्तृत चर्चा की है। उन अनुसार :

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिर्वृत्तये कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे॥

अर्थात् काव्य यश के लिए, अर्थ प्राप्ति के लिए, व्यवहा ज्ञान के लिए, अमंगल शान्ति के लिए, अलौकिक आनन्द प्राप्ति के लिए और कान्ता के समान मधुर उपदेश प्राप्ति लिए प्रयोजनीय होते हैं।

iQOO Z10 5G
03/28/2026, 12:58

मम्मट ने मूलतः छः काव्य प्रयोजन बताए हैं जो निम्नवत हैं :

1. यश प्राप्ति,
2. अर्थ प्राप्ति,
3. लोक व्यवहार ज्ञान,
4. अनिष्ट का निवारण या लोकमंगल,
5. आत्मशान्ति या आनन्दोपलब्धि,
6. कान्तासम्मित उपदेश।

इनमें से काव्य की रचना करने वाले कवि के प्रयोजन हैं—यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, आत्मशान्ति तथा काव्य का अस्वादन करने वाले पाठक के काव्य प्रयोजन हैं—लोक व्यवहार ज्ञान, अमंगल की शान्ति, आनन्दोपलब्धि और कान्तासम्मित उपदेश। मम्मट के ये काव्य प्रयोजन अत्यन्त व्यापक हैं। अब हम इनमें से प्रत्येक पर अलग-अलग विचार करेंगे।

1. यश प्राप्ति—यश प्राप्ति की इच्छा से कविगण काव्य रचना में प्रवृत्त होते रहे हैं। अतः यश प्राप्ति को मम्मट ने काव्य का प्रमुख प्रयोजन माना है। काव्य रचना करके अनेक महाकवियों ने अक्षय यश प्राप्त किया है। कालिदास, सूरदास, तुलसी, बिहारी, प्रसाद जैसे अनेक कवि आज भी अमर हैं। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा है :

"निज कवित्त केहि लाग न नीका।
सरस होहु अथवा अति फीका॥
जो प्रबन्ध कुछ नहिं आदरहीं।
सो श्रम वाद बाल कवि करहीं॥"

अर्थात् अपनी कविता किसे अच्छी नहीं लगती, चाहे सरस हो या फीकी, किन्तु जिस रचना को विद्वानों का आदर प्राप्त नहीं होता उस रचनाकार का श्रम व्यर्थ ही है।

इससे यह ध्वनित होता है कि कवि की आकांक्षा होती है कि उसकी रचना विद्वानों के द्वारा सराही जाए अर्थात् यश प्राप्ति की कामना सभी कवियों में होती है।

जायसी ने भी पद्मावत में यह स्वीकार किया है कि मैं चाहता हूं कि अपनी कविता के द्वारा संसार में जाना जाऊं।

"औ मैं जान कवित अस कीन्हा।
मकु यह रहै जगत मंह चीन्हा॥"

रीतिकालीन कवि आचार्य कुलपति, देव और भिखारीदास ने भी अपने काव्य प्रयोजनों में यश प्राप्ति को विशेष स्थान दिया है।

यह भी उल्लेखनीय है कि कवियों ने जिन राजाओं को अपनी कविता का विषय बनाया वे भी अमर हो गए। निष्कर्ष यह है कि यश प्राप्ति काव्य का प्रमुख प्रयोजन है। अंग्रेजी की यह कहावत कवियों पर भी लागू होती है।

"Fame is the last infirmity of noble minds."

अर्थात् यश कामना महान व्यक्तियों की अन्तिम कमजोरी होती है।

2. अर्थ प्राप्ति—काव्य रचना का एक प्रयोजन धन प्राप्ति भी रहा है। धनोपार्जन की इच्छा से रीतिकालीन कवियों ने राजदरबारों में आश्रय ग्रहण किया। कहते हैं कि बिहारी को प्रत्येक दोहे की रचना के लिए एक अशर्फी प्राप्त होती थी। आधुनिक युग में कवि सम्मेलनों में अनेक कवि अपनी कविताओं को गाकर, सुनाकर अच्छा-खासा धन पैदा कर रहे हैं। इस प्रकार कविता धनोपार्जन का माध्यम बन गई है। इसीलिए सम्भवतः मम्मट ने अर्थ प्राप्ति को काव्य प्रयोजनों में स्थान दिया है।

3. व्यवहार ज्ञान—आचार्य मम्मट ने व्यवहार ज्ञान को भी काव्य का प्रयोजन माना है। रामायण आदि महाकाव्यों के अनुशीलन से पाठकों को उचित व्यवहार की शिक्षा प्राप्त होती है। संस्कृत में बहुत-सा साहित्य इसी प्रयोजन को ध्यान में रखकर लिखा गया था। पंचतन्त्र, हितोपदेश, नीतिशतक जैसे ग्रन्थ व्यवहार ज्ञान की शिक्षा देने के लिए लिखे गए। काव्य के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि हम कैसा व्यवहार करें। रामचरितमानस व्यवहार का दर्पण है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने **चिन्तामणि** में यह स्वीकार किया है कि काव्य से व्यवहार ज्ञान होता है :

"यह धारणा कि काव्य व्यवहार का बाधक है, उसके अनुशीलन से अकर्मण्यता आती है, ठीक नहीं। कविता तो भाव प्रसार द्वारा कर्मण्य के लिए कर्मक्षेत्र का और विस्तार कर देती है।"

4. शिवेतरक्षतये—'शिवेतर' का अर्थ है—अमंगल और 'क्षतये' का अर्थ है—विनाश। इसका तात्पर्य है कि काव्य अमंगल का विनाश करता है और कल्याण का विधान करता है। अपने युग और समाज को अनिष्ट से बचाने के लिए अनेक कवियों ने काव्य रचनाएं लिखी हैं। कहा जाता है कि दिनकर जी ने युद्ध और शान्ति की समस्या को लेकर '**कुरुक्षेत्र**' की रचना की और सम्पूर्ण संसार को शान्ति का सन्देश देते हुए युद्ध के अमंगल से बचाया है।

कभी-कभी कवि व्यक्तिगत अमंगल को दूर करने के लिए भी काव्य रचना करता है। कहते हैं कि संस्कृत के **मयूर कवि** ने कुष्ठ रोग से मुक्ति पाने के लिए '**मयूर शतक**' लिखा था, इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने '**हनुमान बाहुक**' की रचना बाहु रोग से मुक्ति पाने के लिए की थी।

काव्य के पठन-पाठन से भी 'अमंगल का विनाश' होता है। अनेक लोग रामचरितमानस, दुर्गा सप्तशती और गुरु ग्रन्थ साहब का पाठ अमंगल के विनाश के लिए करवाते हैं।

5. आत्मशान्ति—काव्य पढ़ने के साथ ही तुरन्त आनन्द का अनुभव होता है और परम शान्ति की प्राप्ति होती है। काव्य का रसास्वादन करने से अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। वस्तुतः आनन्दोपलब्धि ही काव्य का प्रमुख प्रयोजन है। काव्य का रसास्वादन करते समय पाठक को समाधिस्थ योगी के समान अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है। कुछ समय के लिए वह अपनी

iQOO Z10 5G
03/28/2026, 12:58

सत्ता को भूलकर काव्य के आनन्द में लीन हो जाता है। इसीलिए काव्यानन्द को 'ब्रह्मानन्द सहोदर' कहा गया है। काव्य की रचना करके कवि को भी यही आनन्द मिलता है और काव्य का रसास्वादन करके पाठक को भी ऐसे ही आनन्द की अनुभूति होती है। इस प्रकार काव्य का प्रयोजन कवि और पाठक दोनों से सम्बन्धित है। काव्य में डूबा हुआ मन साधारणीकरण की स्थिति में पहुंचकर रसमग्न हो जाता है और यही रसमग्नता परमशान्ति अर्थात् आनन्द प्रदान करती है। आचार्यों ने इसी कारण इस प्रयोजन को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हुए 'सकलमौलिभूत' प्रयोजन कहा है।

6. **कान्ता सम्मित उपदेश**—काव्य प्रियतमा के समान मधुर उपदेश देने वाला है। उपदेश तीन प्रकार के होते हैं :

1. प्रभु सम्मित उपदेश
2. मित्र सम्मित उपदेश
3. कान्ता सम्मित उपदेश

वेदशास्त्रों का उपदेश प्रभु सम्मित (स्वामी के उपदेश) जैसा है। वह हितकर तो है पर रुचिकर नहीं। पुराणों और इतिहास आदि का उपदेश मित्रतुल्य उपदेश है, जिसकी अवहेलना भी की जा सकती है, किन्तु काव्य का उपदेश कान्ता सम्मित उपदेश है जो हितकर भी है, रुचिकर भी है और जिसकी अवहेलना भी नहीं की जा सकती।

जिस प्रकार कान्ता (प्रेयसी) मधुर हावभावों से पुरुष को मुग्ध करके उसे अपनी इच्छानुकूल नीति मार्ग पर ले जाती है, उसी प्रकार काव्य भी मधुर कथा के द्वारा उच्च आदर्शों की शिक्षा देता है; जिस प्रकार मिठाई के लोभ में बालक कटु औषधि खा लेता है, उसी प्रकार रस के मधुर आस्वाद से मिश्रित शिक्षा काव्य द्वारा सरलता से कराई जा सकती है। इसीलिए कबीर, तुलसी, नानक आदि अनेक कवियों ने अपने उपदेशों का प्रचार काव्य के माध्यम से किया है।

हिन्दी आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजन—हिन्दी आचार्यों ने काव्य प्रयोजन पर जो विचार व्यक्त किए हैं प्रायः संस्कृत आचार्यों जैसे हैं। यहीं हम कुछ प्रमुख उद्धरण प्रस्तुत कर रहे हैं :

1. **गोस्वामी तुलसीदास के काव्य प्रयोजन**—रामचरित मानस में **तुलसीदास** ने दो काव्य प्रयोजनों की चर्चा की है :

(i) **स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा**

(ii) **कीरति भनिति भूति भल सोई।**
सुरसरि सम सब कहँ हित होइ॥

वे काव्य में दो प्रयोजन मानते हैं :

(a) स्वान्तः सुख, (b) लोक मंगल।

वही कविता श्रेष्ठ होती है जो गंगा के समान सबका हित करने वाली हो।

2. **भिखारीदास द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजन—**

एक लहै, तप पुंजन के फल, ज्यों तुलसी अरु सूर गुसाईं।
एक लहै बहु सम्पति केशव, भूषण ज्यों बर बीर बड़ाई॥
एकन्ह को जस-ही सों प्रयोजन, है रसखानि रहीम की नाईं।
दास कवित्तन्ह की चरचा बुद्धिवन्तन को सुख दै सब ठाईं॥

यहां यश प्राप्ति, फल प्राप्ति, आनन्द प्राप्ति आदि को काव्य प्रयोजन के रूप में स्वीकार किया गया है।

3. **मैथलीशरण गुप्त का मत**—गुप्तजी काव्य का प्रयोजन केवल मनोरंजन नहीं अपितु उपदेश स्वीकार करते हुए लिखते हैं :

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥"

इसी प्रकार वे काव्य कला के लिए सिद्धान्त का खण्डन करते हुए कहते हैं कि कला लोकहित के लिए होनी चाहिए :

"मानते हैं जो कला को बस कला के अर्थ ही।
स्वार्थिनी करते कला को व्यर्थ ही॥"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने काव्य प्रयोजनों पर विस्तार से विचार किया है। वे कविता का प्रमुख प्रयोजन रसानुभूति मानते हैं।

"कविता का अन्तिम लक्ष्य जगत में मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उसके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापन है।"

कविता से केवल मनोरंजन के उद्देश्य का विरोध करते हुए वे लिखते हैं :

"मन को अनुरंजित करना उसे सुख या आनन्द पहुंचाना ही यदि कविता का अन्तिम लक्ष्य माना जाए तो कविता ही विलास की एक सामग्री हुई।.....काव्य का लक्ष्य है जगत और जीवन के मार्मिक पक्ष को गोचर रूप में लाकर सामने रखना॥"

पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र में काव्य प्रयोजन पर कला के सन्दर्भ में विचार किया गया है। इस सम्बन्ध में दो प्रमुख मत हैं। कलावादियों के अनुसार कला का एकमात्र प्रयोजन सौन्दर्य सृष्टि है और इसीलिए वे काव्य कला के लिए सिद्धान्त के समर्थक हैं, जबकि उपयोगितावादियों के अनुसार कला का उद्देश्य लोकहित का विधान करना है।

निष्कर्ष—काव्य प्रयोजन के सम्बन्ध में जो मत यहां व्यक्त किए गए हैं उनसे हम निम्न निष्कर्ष निकाल सकते हैं :

1. प्रत्येक व्यक्ति का काव्य प्रयोजन एक-सा नहीं होता।
2. आनन्द प्राप्ति काव्य का प्रमुख प्रयोजन है जिसे रसानुभूति से प्राप्त किया जाता है।
3. यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान, अमंगल विनाश, लोकोपदेश आदि काव्य प्रयोजन है।
4. काव्य प्रयोजन काव्य प्रेरणा से अलग है।

निष्कर्ष रूप में आचार्य मम्मट द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजन उचित, तर्कसंगत, व्यापक और व्यावहारिक है अतः हम उन्हीं को वरीयता देते हैं।

iQOO Z10 5G
03/28/2026, 12:58